B.A. I
Revised for (Sub)

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

भारत का प्राचीन इतिहास अत्यन्त गौरवपूर्ण रहा है, इतिहासकार उपलब्ध साधनों की समीक्षा करके अतीत का सही चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। साहित्यिक एवं पुरातात्विक साधनों के अतिरिक्त विदेशी विवरणों का भी अत्यधिक महत्व है। प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए शुद्ध ऐतिहासिक साहित्यिक सामग्री अन्य देशों की अपेक्षा बहुत कम उपलब्ध है। प्राचीन भारत के निवासी लेखन-कला से अच्छी तरह परिचित थे और उन्होंने अनेक विषयों पर उच्च कोटि के ग्रन्थों की रचना की, लेकिन कोई ऐसा ऐतिहासिक घटनाओं का तिथिपरक मूल्यांकन न किया जा सका। अनेक काव्यों, महाकाव्यों और नाटकों की रचना हुई जो तत्कालीन अवस्था पर प्रकाश डालते हैं। साहित्यिक स्रोतों के अतिरिक्त पुरातात्विक साधनों से भी हमें प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है पुरातत्ववेत्ताओं ने अपने अथक परिश्रम तथा खोजों से इतिहास के बहुत से साधन ढूंढ निकाले हैं जिससे भारत के अतीत पर काफी प्रकाश पड़ता है। अतएव प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के ~~साधनों को~~ इन स्रोतों के आधार पर क्रमबद्ध तरीके से साधन प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है। इतिहास के स्रोतों को मूल रूप से तीन भागों में बाँटा जा सकता है

(1) पुरातात्विक स्रोत (Archaeology sources)

(2) साहित्यिक स्रोत (Literary Sources)

(3) विदेशी विवरण (Foreign Accounts)

(1) पुरातात्विक स्रोत →

भारत में पुरातात्विक सामग्री का भंडार प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, अनेक स्थानों पर किया गया उत्खनन कार्य इसका प्रमाण है। वास्तव में प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए पुरातात्विक सामग्री का अधिक महत्व है। चूंकि अनेक प्राचीन भारतीय ग्रन्थों का रचना काल ठीक से ज्ञात नहीं है अतः इन ग्रन्थों से किसी काल विशेष की सामाजिक और आर्थिक

आर्थिक स्थिति का ठीक-ठीक पता नहीं चलता है।

पुरातात्विक सामग्री के अन्तर्गत शिलालेख, अभिलेख मुद्राएँ, स्मारक भवन, मूर्तियाँ, चित्रकला तथा अन्य अवशेषों को रखा जाता है

(I) ~~शिलालेख~~

शिलालेख → प्राचीनकाल के धातुओं और पत्थरों पर अंकित विवरण ही शिलालेख है। इनके अध्ययन से पता चलता है कि ये व्यापारिक, मायावी, धार्मिक एवं प्रशासनिक अन्य साहित्यिक लेख थे। इनमें सिन्धु घाटी से प्राप्त ~~मुहरें~~ मोहरें, अशोक के शिलालेख हर्ष का बाँसखेड़ा अभिलेख, कलिंग के राजा खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख, समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भ लेख, कुमारगुप्त II ~~[illegible]~~ शिलालेख इत्यादि हमारे ज्ञान में वृद्धि करते हैं। इन लेखों से राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक जीवन का अध्ययन कर सकते हैं।

(II) **अभिलेख (Inscriptions)** पुरातात्विक स्रोतों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण ~~स्रोत~~ अभिलेख है। जिन्हें चार श्रेणियों में बाँटा जा सकता है गुफालेख, शिलालेख, स्तम्भलेख और ताम्रपत्र लेख। इन अभिलेखों से प्राचीन भारतीय इतिहास के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश पड़ता है इनसे प्राचीन राजाओं के नाम, कार्य, वंश, तिथि और उनसे संबंधित घटनाओं का पता चलता है। ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~

अभिलेखों को दो भागों में बाँटा जा सकता है

देशी अभिलेख और विदेशी अभिलेख —

देशी अभिलेख — इस अभिलेख से शासकों के जीवन चरित्र, साम्राज्य विस्तार, धर्म, शासन प्रबन्ध कला तथा राजनीतिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है जैसे — अशोक के शिलालेख से अशोक के विषय में, प्रयाग स्तम्भ लेख से समुद्रगुप्त आदि

विदेशी अभिलेख → इन अभिलेखों की संख्या अधिक है। उल्लिखित देवताओं की मूर्तियों, तथा धार्मिक इमारतों इन्द्र, वरुण आदि आर्य वैदिक देवताओं के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner